3.13. Memorabilia

Dr (Mrs) Prabha Jagota

Director *28-12-1998*

My entry into the NTI, Bangalore, was in itself a memorable event. After waiting for three and a half years for my transfer, in 1975 during the emergency period when the GOI looked into my file and acceded to my request for transfer from Delhi to Bangalore and posted me to NTI, my happiness knew no bounds and I proceeded to meet the Director of this Institute. My first meeting with Dr Nagpaul was an explosive one. I thought of my clinical background amidst the drab settings of the Institute. From his facial expression, it was evident that the Director did not have a good opinion of me. I did not feel like working at NTI. Despite that, he made sure that I assumed charge the same day before leaving. During the course of the interview, on being asked for how long I intended to stay on the job, I replied that it was till the time I learnt all about Mycobacterium or till the time my husband would stay in Bangalore. In those days, my husband was working for a pharmaceutical company based in Bangalore. About 5-6 months after joining NTI, one day in the TCC meeting, the Director praised me for my good work and added that he had to change his opinion regarding female employees especially lady doctors. The experience I had gained from my earlier stint in Municipal Corporation of Delhi stood me in good stead in the field of public health and family planning. I also learnt new things with a lot of zeal. I was impressed with the team spirit and the complete freedom that I had. The Officer was free to choose between participating in training activities or doing research work. Due to the immense freedom I had at work, I was so deeply immersed in research and training activities that I lost track of the time; that very freedom enslaved me and 25-27 years of my service had passed without even realising. My attachment to Bangalore was so strong that my family started living like south Indians.

Dr Nagpaul was my source of inspiration. Even today he is a dynamic worker with the Indian TB Association. Several years later he disclosed to me that he was compelled to include me in the workforce of NTI, as at that time, more than half the posts of MOs were vacant. When I think of the long service I had rendered at this prestigious institution, I feel I was ordained to do so largely as a design of destiny.

संस्करण

डा. (श्रीमती) प्रभा जगोता २७.१२.१९९८

निदेशक

राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान में प्रवेश होना अपने आप में मेरे लिए एक अविस्मरणीय घटना है । अपने ट्रान्सफर हेतु साढ़े तीन साल इन्तजार करने के बाद सन् १९७५ में जब आपातकालीन स्थिति के दौरान मेरी फाइल खुली तो भारत सरकार ने मेरी दिल्ली से बेंगलूर के ट्रान्सफर की याचिका मन्जूर करके एन.टी.आई. के लिए आर्डर भेजे ।

मैं बहुत प्रसन्नचित होकर इस संस्थान के निदेशक महोदय से मिलने आई । डा. नागपाल से मेरी प्रथम भेंट के दौरान जो इन्टरव्यू हुआ वह काफी विस्फोटक रहा । एक तरफ मैं सोच रही थी कि कहाँ क्लीनिकल काम और कहाँ यह सार जैसी संस्थान । निदेशक महोदय के चेहरे से बराबर लग रहा था कि उनकी मेरे बारे में धारणा अच्छी नही है । मेरी भी इच्छा एन.टी.आई .में काम करने की नही रही। किन्तु इसके बावजूद उन्होंने मुझे उसी दिन कार्यभार ग्रहण करने के बाद ही आने दिया। इन्टरव्यू के दौरान उनके यह पूछे जाने पर कि मैं यहाँ कब तक काम करुँगी ? मेरा उत्तर था, तब तक ,जब तक माईकोबैक्टिरियम के बारे मे जान नही लेती अथवा जब तक मेरे पति यहाँ नौकरी पर हैं । उस समय मेरे पति अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान दिल्ली छोड़कर स्मिथ क्लीन फ्रन्च बेंगलूर में मेडिकल डायरेक्टर के पद पर सन् १९७२ से कार्यरत थे । एन.टी.आई. में कार्यभाल सम्भालने के ५-६ महीने के बाद एक दिन टी.सी.सी. मीटिंग में निदेशक महोदय ने मेरे काम की प्रशंसा की तथा यह कह कर चौंका दिया कि मेरे काम को देखकर उन्होंने महिला कर्मचारियों के प्रति खास कर महिला डॉक्टरों के प्रति, अपनी धारणा बदल दी है । मैंने अपने पहले सेवा काल दिल्ली नगर निगम के परिवार कल्याण विभााग में काम करते समय जो अनुभव प्राप्त किया था उसका मैंने पूर्ण निष्ठा व लगन से यहाँ के शोध, फील्ड वर्क, ट्रेनिंग आदि में उपयोग किया व नया काम भी मन लगाकर सीखा । इसके अलावा एन.टी.आई. मे काम करने की अद्भूत प्रणाली जो खास कर एक समूह के कार्य पर आधारित है मुझे बहुत भा गयी । दूसरी बात जो मुझे निराली लगी, वह थी यहाँ पर काम करने की पूर्ण स्वतंत्रता । ट्रैनिंग में भाग लेना है या शोध कार्य करना है ? ऑफीसर स्वंय चुन सकता था । धीरे - धीरे पूर्ण स्वतंत्रता के कारण शोध कार्य व ट्रेनिंग दोनो में इतनी व्यस्त हो गयी कि मुझे वही स्वतंत्रता समय की कब गुलाम बना गई, और सेवाकाल के २५-२७ वर्ष यहाँ कैसे व्यतीत हो,गये पता भी नही चला । बेंगलूर से मेरा रिश्ता इतना अटूट रहा कि हम परिवार जन दक्षिण भारत वासी बन कर ही रह गये ।

महोदय डा.नागपाल तो तब भी मेरी प्रेरणा के स्रोत थे और आज भी हैं । वह इन दिनों भी भारतीय क्षयरोग सगंठन में सक्रिय रूप से कार्यरत हैं । उन्होंने मुझे कई साल बाद यह राज बताया कि उस दिन मुझे कार्यभार ग्रहण कराने की उनकी मजबूरी थी, क्योंकि उस समय एन.टी.आई. में आधी से ज्यादा मेडिकल ऑफिसरों की पोस्टें खाली थी । इतनी गौरवशाली संस्थान में इतने लम्बे समय तक कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, आज यह सोचती हूँ तो लगता है हमारे जीवन में काफी कुछ विधि के विधान के निहित ही घटित होता है ।